QY-133-R

B. A. (Part-III) Examination-2024

(For Regular / Ex. Candidates)

हिन्दी साहित्य

Paper - II

नाटक और निबंध

Time allowed : **Three Hours**

Maximum Marks : **100**

This question paper contains three sections as under:

Section-A **खण्ड–अ** ***Max. Marks-10***

This section contains one compulsory question with 10 parts. Answer of each part should not exceed 20 words. All questions carry equal marks.

इस खण्ड में एक अनिवार्य प्रश्न है जिसमें 10 भाग हैं। प्रत्येक भाग का उत्तर लगभग 20 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Section-B **खण्ड–ब** ***Max. Marks-50***

This section contains 10 questions or explanations. Attempt 5 questions or explanations in all, selecting one question or explanation from each unit. Answer of each question or explanation should not exceed 250 words. All questions or explanations carry equal marks.

इस खण्ड में 10 प्रश्न अथवा व्याख्या है। प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न अथवा व्याख्या का चयन करते हुये कुल 05 प्रश्नों अथवा व्याख्याएं के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न अथवा व्याख्या का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों अथवा व्याख्याएं के अंक समान हैं।

Section-C **खण्ड–स** ***Max. Marks-40***

This section contains 04 questions (questions may have sub-division). This section will cover all units but not more than one question from each unit. Attempt 2 questions in all. Answer of each question should not exceed 500 words. All questions carry equal marks.

इस खण्ड में 04 प्रश्न हैं, प्रश्न के भाग हो सकते है। इस खण्ड में एक इकाई से अधिकतम एक प्रश्न होगा। कुल दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड – अ

1 सभी प्रश्न अनिवार्य है:

(i) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक कितने अंकों में विभाजित है ?

(ii) 'मैं खुदा का बंदा हूँ। मेरा मजहब इनसान की इबादत है।' 'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक में यह कथन किसने किससे कहा ?

(iii) दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है, आनन्द वर्ग में वही स्थान किसका होता है ? उत्साह निबन्ध के अनुसार बताइए।

(iv) 'देवदारु' किस विधा की रचना है ?

(v) निर्मल वर्मा के किन्हीं दो निबन्ध संग्रहों के नाम लिखिए।

(vi) 'भारतीय संस्कृति का मूल आधार है, तितिक्षा, जिसकी सही अर्थ में मूर्त व्यंजना ही दूर्वा है।' कथन किस निबन्ध से लिया गया है ?

(vii) कोलकाता में 'हिन्दी थिएटर' किसने स्थापित किया था ?

(viii) चिन्तामणि किसके निबन्धों का संग्रह है ?

(ix) निबंध शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(x) नाटक के कोई दो तत्त्व लिखिए।

2 सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

परन्तु तुम क्या सजीव व्यक्ति नहीं हो ? तुम्हारे प्रति उसका या तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं है ? कल जब तुम्हारी माँ का शरीर नहीं रहेगा और घर में एक समय के भोजन की व्यवस्था भी न होगी, तब जो प्रश्न तुम्हारे सामने उपस्थित होगा, उसका तुम क्या उत्तर दोगी ? तुम्हारी भावना उस प्रश्न का समाधान कर देगी ? फिर कह दो कि यह मेरी नहीं, विलोम की भाषा है।

अथवा

3 मेरा परवरदिगार मेरे चारों ओर है। वह मेरे दिल में बसता है। उसकी नज़र में न कोई हिन्दू है, न तुर्क। मैं अल्लाह का नूर हर इनसान में देखता हूँ, इनसान के दिल में देखता हूँ।

इकाई – II

4 सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ ही साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत कुछ असर पैदा कर देता है। वाल्मीकि ने जिन–जिन बातों को अवगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचन्द्र में बरकाया था वे

https://www.uokonline.com

ही सब व्यास के समय में गुण हो गई, जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान, अपना गौरव, अपना प्रभुत्व जहाँ तक हो सके न जाने पावे। भारत के हर एक प्रसंग का तोड़ अन्त में इसी बात पर है।

अथवा

5 शब्द सदा सामान्य अर्थ प्रकट करते हैं। कवि विशिष्ट अर्थ देना चाहता है। वह छन्दों के सहारे, उपमान–योजना के बल पर, ध्वनि साम्य के द्वारा विशिष्ट अर्थ का साधारणीकरण करता है। तो भी क्या सब उसके विशिष्ट अर्थ को समझ पाते हैं? बिलकुल नहीं। कोई बड़भागी होता है जिसके दिल की धड़कन कवि के दिल की धड़कन के सात ताल मिला पाती है? कवि के हृदय के साथ जिसका हृदय मिल जाय उसे 'सहृदय' कहा जाता है।

इकाई – III

6 सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

मैं 'यथार्थ' को मंजूर करते हुए भी 'यथार्थवाद' को नामंजूर करता हूँ। यथार्थ 'सत्य' है पर यथार्थवाद सत्य के नाम पर 'सिद्धान्तबाजी' है। सत्य और सिद्धान्तबाजी में क्या फर्क होता है, बीसवीं सदी के अन्तिम दशक तक पर्याप्त स्पष्ट हो चुका है और मैं अपने जीवन में अड्डाबाजी, पतंगबाजी, कबूतरबाजी या इससे भी बढ़कर 'कुछ और' बाजी से कभी

नहीं जुड़ा रहा तो 'वाद' आधारित इस यथार्थवाद की सिद्धान्तबाजी से क्यों जुड़ने जाऊँ?

अथवा

7 कोई नैतिक निर्णय बाह्य कर्म के आधार पर नहीं हो सकता, आभ्यन्तर उद्देश्यों का विचार होना चाहिए, यही उनके उपदेश का हेतु था। या कम–से–कम एक हेतु, क्योंकि दूसरा तो यह था ही कि जो अपराधी है उसे दण्ड न दो, समवेदना दो – मानवीय समवेदना तो सबसे बड़ा नैतिक मूल्य है ही।

इकाई – IV

8 हिन्दी नाटक की विकास परम्परा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

9 हिन्दी के प्रमुख ललित निबन्धकारों का परिचय दीजिए।

इकाई – V

10 नाटक और रंगमंच विषय पर लेख लिखिए।

अथवा

11 निबंध की परिभाषा देते हुए निबंध के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड – स

12 'कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और युग प्रवर्तक की सोच इस कृति में पूरी जिवन्तता के साथ मौजूद है।' कथन के आलोक में 'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक की समीक्षा कीजिए।

13 'धर्म और समाज' निबंध में व्यक्त विचारों पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित कीजिए।

14 'भारतीय संस्कृति और राष्ट्र' निबंध का भाव स्पष्ट करते हुए निर्मल वर्मा के निबन्धों की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

15 निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए –

(i) निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

(ii) नाटककार मोहन राकेश।

(iii) संकलन त्रय।

(iv) भावात्मक निबंध।

Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से